स्नातक प्रथम वर्ष
हिन्दी प्रतिष्ठा / बी०एस०सी० प्रथम वर्ष
सामान्य हिन्दी / अनुषंगिक हिन्दी

प्रेमाख्यानक काव्य का दार्शनिक आधार

सूफी-मत प्रेमाख्यानक काव्य को दार्शनिक आधार प्रदान करता है। सूफी मत का आविर्भाव ईरान में होता है। ईरानी समाज मातृसत्तात्मक समाज है, इसीलिए सूफी मत में ब्रह्म की परिकल्पना स्त्री के रूप में की गई है। सूफी दर्शन में यह माना जाता है कि अलौकिक नूर अर्थात् ब्रह्म खुद को लौकिक हूर अर्थात् स्त्री के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसीलिए सूफी साधना में रूप का निषेध नहीं, रूप की स्वीकृति है। वहाँ पर यह माना जाता है कि लौकिक हूर अर्थात् रूप के जरिए ही अलौकिक नूर अर्थात अरूप ब्रह्म तक पहुँचा जा सकता है। यही कारण है कि सूफी साधना-पद्धति में नारी को साधना के मार्ग में बाधक मानने के बजाय अनिवार्य माना गया है। वहाँ पर नारी के बिना साधना की पूर्णता की कल्पना नहीं की जा सकती। इसीलिए नर-नारी संयोग में सूफी-साधना चरम परिणति प्राप्त करती है।

सूफी मत इस्लाम की उदारवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए इस्लाम धर्म की तरह सूफियों का ब्रह्म भी निर्गुण है। सूफी दर्शन में ब्रह्म व जीव के बीच अद्वैत पर जोर दिया गया है, लेकिन

आलमे नासूत (भौतिक जगत) से आलमे लाहूत (आध्यात्मिक जगत) तक की यात्रा के क्रम में ब्रह्म, जीव और जगत इन तीनों को तीन पृथक सत्ता के रूप में स्वीकार किया जाता। इसमें साधक की साधना का लक्ष्य ब्रह्म के साथ अद्वैतता की प्राप्ति है और इसके लिए प्रेम मार्ग पर जोर दिया जाता है। यही कारण है कि सूफी साधना लौकिक प्रेम की ही आध्यात्मीकरण की प्रस्तावना करती है और लौकिक प्रेम के प्रति उनका यह आग्रह उस चरम बिंदु तक पहुँच जाता है जहाँ पर वे ईश्वरीय प्रेम के ~~स्थान~~ स्थान मानुष प्रेम की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हैं और यह मानुष-प्रेम को पैगंबरी कलाम की समानता के साथ उपस्थित होता है।

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि सूफी दर्शन प्रेमाख्यानक काव्य को दार्शनिक आधार प्रदान करता है, लेकिन प्रेमाख्यानक काव्य का दर्शन न तो सूफी दर्शन से बँधा है और न ही सूफी मत तक सीमित है। इसपर भारतीय वेदांतवाद के प्रभाव को भी देखा जा सकता है। भारतीय दर्शन के प्रभाव के कारण ही इस्लामी एकेश्वरवाद की जगह बहुदेववाद की अभिव्यक्ति मिलती है। साथ ही साधना मार्ग में प्रेमाख्यानक काव्य से जुड़े अधिकांश रचनाकारों ने ब्रह्म, जीव व जगत के अंतः संबंधों का भी अनुमोदन किया है, वह उन्हें सूफी परंपरा की जगह भारतीय परंपरा के कहीं अधिक

करीब ले आता है। ~~इसीलिए~~ इसके अतिरिक्त इसमें हठयोग साधना से जुड़ी हुई शब्दावली का भी प्रयोग किया गया है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि दर्शन के धरातल पर भी प्रेमाख्यानक काव्य में भारतीय व अभारतीय तत्वों का समावेश हुआ है।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
ए० पी० एस० एम० कॉलेज,
बरौनी, बेगूसराय
ललित नारायण मिथिला-
विश्वविद्यालय, दरभंगा